ISSN: 2249-894X IMPACT FACTOR : 5.2331(UIF) VOLUME - 6 | ISSUE - 12 | SEPTEMBER - 2017

REVIEW OF RESEARCH

समकालीन हिन्दी कहानी की भाषा शैली
गीताश्री के कहानी संग्रह 'प्रार्थना के बाहर'के विशेष संदर्भ में

श्रीमती तबस्सुम खान
अध्यक्ष, हिंदी विभाग, रॉयल महाविद्यालय, मीरा रोड, थाने.

कहानी ज़िंदगी का एक संवाद है, यह संवाद ज़िंदगी के संवादों से जुड़कर एक कहानी का रूप धारण करता है. हिन्दी साहित्य में जीवन और जगत के इंद्रधनुषी रंगों से निर्मित यह विधा मानव जीवन में आए उतार-चढ़ाव की गाथा वर्षों से कहती चली आई है. समाज और संस्कृति युगों-युगों से कहनी विधा के अभिन्न अंग रहे हैं. हमारी तहजीब की खुशबू कहानी के फूलों में बसकर न केवल हमारा घर आँगन महकाती रही है बल्कि हर युग में समाज में मूल्यों एवं आदर्शों की स्थापना करती चली आई है. संस्कृति की गोद में ही जीवन मूल्यों, रीति रिवाजों और विश्वासों का जन्म होता है, यही कारण है कि साहित्य में झलकती संस्कृति समाज का आईना बनकर झलक उठती है. इसीलिये कहानी या साहित्य की अन्य विधाएं निजी अनुभूति मात्र न होकर हमारे समाज का चेहरा है जो बदलती हुई सभ्यता एवं संस्कृति को प्रतिबिंबित करती है.

हर युग की कहानी में हमें समाज में करवटें बदलती हुई संस्कृति स्पष्ट रूप से नज़र आती है. 21वीं शताब्दी की कहानियों में भूमंडलीकरण एवं उदारीकरण की गहरी छाप स्पष्ट देखी जा सकती है.पश्चिमी समाज भले ही अब किसी देश को गुलामी की जंजीरों में नहीं जकड़ता है मगर मानसिक दासता कहीं गहरे एशियाई दिमागो में फैलती जा रही है. ९०वें को दशक में नए उभरते हुए कहानीकारों ने सांस्कृतिक संक्रमण को उजागर किया है. प्रेमचंद युगीन वर्णिय या वर्गीय कश्मकश कहानी से धीरे-धीरे लुप्त होती चली गई. बढ़ती हुई संप्रदायिकता, कानून के प्रति बढ़ता अविश्वास, आर्थिक डांवाडोल स्थिति, सत्ता में बढ़ता भ्रष्टाचार और जनता में बढ़ता असंतोष और आक्रोश इस दौर के साहित्य में दर्ज किया गया है.इसके अतिरिक्त दलित एवं नारी विमर्श को भी कहानियों में बखूबी चित्रित किया गया है. समकालीन कहानीकारों ने राजनीति का घिनौना चेहरा, देश की अर्थ व्यवस्था और उसे प्रभावित करते कारण, सभ्यता एवं संस्कृति में आए बदलाओ का समाज पर असर, परिवारों एवं रिश्तों के बीच बढ़ती दरारों और भूमंडलीकरण तथा बाजारवाद के बढ़ते दबावों को समकालीन कहानी में उभारा है. इन कहानीकारों ने केवल भारतीय परिवेश को चित्रित करने की बजाये वैश्विक धरातल पर सिर उठाती हुई समस्याओं और बेचैनियों का ज़िक्र अपनी कहानियों में किया है.

महिला कथाकारों जैसे मन्नू भण्डारी उषा प्रियम्वदा और कृषणा सोबती इत्यादि ने स्त्री दमन, शोषण और असमानता और एक मानवी के रूप में प्रतिष्ठित होने की अदम्य इच्छा का अपने कथा साहित्य में समावेश पिछले दशकों में ही किया था. आगे चलकर नमिता सिंह, मधु कंकरिया अल्का सरावगी नासिरा शर्मा अनामिका सुधा अरोरा और गीता श्री जैसी रचनाकारों ने समाज में चरमरा कर टूटती वर्जनाओं स्त्री पुरुष संबंधों में आए परिवर्तनों, वैचारिक आंदोलनों और संघर्षों को बखूबी उकेरा है. शायद ही कोई ऐसा विषय या प्रश्न हो जो इन कथाकारों ने साहित्य में नहीं उठाया हो. गीता श्री एक ऐसी ही उभरती हुई रचनाकार हैं जिन्होने एक स्वतंत्र मानवी की शनाख्त के लिए इसी मंच से आवाज़ उठाई है. प्रस्तुत शोध पत्र के माध्यम से हम उनके कथा संग्रह 'प्रार्थना के बाहर' में संग्रहित कहानियों द्वारा समकालीन कहानी की भाषा शैली में आये परिवर्तनों पर एक सरसरी नज़र डालते हुए चलेंगे.

आधुनिक कहानी ने जिस जीवन यथार्थ को अपना कथ्य बनाया है, उसी के अनुरूप कहानीकारों ने भाषा भी गढ़ी है. आज कहानी में से काल्पनिकता, रोमानियत, भावुकता इत्यादि लुप्त प्राय: है. जीवन से अत्यधिक निकटता के कारण अब भाषा अधिक सहज, सरल और अनगढ़ हो गयी है. भाषा शैली ने कथ्य के अनुरूप ही अपना रंग भी बदला और नए प्रतीक, बिम्ब, उपमान नयी अभिव्यक्ति में शामिल होते चले गए. नवीन युग मूल्यों के संग साँस लेते हुए कहानीकारों ने ज़िन्दगी के साथ साथ अपनी भाषा को औपचारिकता से बिल्कुल ही मुक्त कर दिया है. साहित्य एक माध्यम है समाज में जागरूकता उत्पन्न करने का जो आनेवाले कई दशकों तक समाज में आये परिवर्तनों को एक दस्तावेज़ के समान हमारे सम्मुख प्रस्तुत करता रहेगा. नए विचारों, नए रास्तों और नयी मंजिलों को तलाश करती नयी पीढ़ी की प्रतिनिधि गीताश्री ने 'प्रार्थना के बाहर' में संकलित अपनी १४ कहानियों के माध्यम से पहचान की प्यास, अकेलेपन,जड़ों से उखड़ने की पीड़ा, संस्कृति के टकराव तथा पाश्चात्य प्रभाव को अपनी बेबाक भाषा शैली द्वारा सामने रखा है.

जिन शब्दों से हम दिनरात घिरे रहते हैं वही शब्द हमारे द्वारा प्रयुक्त भाषा को प्रभावित करते हैं. आज जहाँ अधिकतर लिखित भाषा हमें अपने कंप्यूटर, टेबलेट या स्मार्ट फोन के स्क्रीन पर नज़र आती है, वहां भाषा ज्यादा से ज्यादा तकनीकी उपकरणों के आसपास ही घूम रही है. संचार माध्यमों की बढती लोकप्रियता ने औपचारिक भाषा को तकरीबन समाप्त करने की ठान ली है और अब हमारी भाषा अधिक अनौपचारिक और बेबाक होती चली जा रही है. यही खुलापन हमारे जीवन से जुड़े अन्य भागों के साथ साहित्य में भी अपने कदम जमा रहा है. समाज बदलते हुए सांस्कृतिक मूल्यों को दर्शाने हेतु नयी भाषा शैली का निर्माण करता है और धीरे-धीरे वही भाषा हमारे साहित्य का भी अभिन्न अंग बन जाती है. बदलते हुए परिवेश के साथ समकालीन कहानी की बदलती भाषा शैली का अध्ययन हम गीताश्री की कहानियों के सन्दर्भ में निम्नलिखित शीर्षकों की सहायता से कर सकते हैं.

1. संप्रेषण का विकास: गद्य विधा का अत्यंत विकसित रूप हमें आज की कहानी में नज़र आता है. सामान्य एवं प्रचलित परम्परा को तोड़ते हुए समकालीन कथाकारों ने नए भाषिक प्रयोग अपनाये हैं और नए ढंग से भाषा को संवार कर उसकी संप्रेषणीयता में वृध्दि की है. ज्ञानरंजन, राजी सेठ, हिमांशु जोशी और अमरकांत की कहानियों की भाषा सीधी सरल मगर प्रभावोत्पादक है. गीताश्री की भाषा शैली भी कोरी भावुकता से मुक्त होने के कारण उन्हें अन्य महिला रचनाकारों से अलग स्थान प्रदान करती है. सरल मगर धारदार भाषा ने उनकी कहानियों को नए तेवर प्रदान किये हैं. पात्र एवं स्थितियों को बारीकी से सामने लाने

का हुनर गीताश्री में बखूबी पाया जाता है. अपने अंचल (बंगाल) की विशेष गंध उनकी कई कहानियों में दृष्टिगोचर होती हैं, विशेषतः 'सोनमछरी' में बंगाल की सौंधी महक में डूबी पात्रों की भाषा कथा को अधिक दृश्यात्मक बना देती है. गीताश्री की भाषा में हमें कृष्णा सोबती के ही समान खुलापन, उर्दू की रवानगी और गालियों का बेझिझक प्रयोग देखने को मिलता है. यथार्थ का खुरदुरापन उनकी भाषा में झलकता ज़रूर है मगर कहीं भाषा बोझिल नहीं जान पड़ती बल्कि एक ताजगी भरा वातावरण हर कहानी में निर्मित होता चला गया है. सोनमछरी की नायिका द्वारा नए पति के चुनाव को उन्होंने कुछ इस प्रकार व्यक्त किया है 'वह इतना ही समझी कि गंगा ने अपना पाट बदल लिया है.१ पात्रों की मनोदशा का उनकी भाषा में पारदर्शी चित्रण पाया जाता है जैसे 'प्रार्थना की आँखों से नशा गायब हो गया वहां चमचमाते चाकू सी चमक लहराई'२

2. यथार्थ जीवन के निकट की भाषा: समकालीन कहानी की भाषा भले ही जीवन और जगत से जुड़ गयी है मगर वह साधारण बोलचाल की भाषा नहीं करार दी जा सकती है.जीवन की विषमताओं, विसंगतियों और असंतोष के बीच जन्मी भाषा ने आम भाषा को कहानी के संस्कारों में ढाला है. भाषा कि कारीगरी में ज्ञानरंजन भीमसेन त्यागी और काशीनाथ का नाम समकालीन रचनाकारों में विशेष रूप से लिया जा सकता है, जिन्होंने कहानी की भाषा को आम जीवन से बेहद करीब ला खड़ा किया है. गीताश्री ने भी रोज़मर्रा प्रयोग में आनेवाले मुहावरों को अपनी कहानियों में इस्तेमाल किया है उदा.'वरना क्यों भली लड़की की इस इमेज से फेविकोल के जोड़ की तरह चिपकी रहती.'३ एक और स्थान पर लेखिका ने आम बोलचाल के शब्दों का बड़ी कुशलतापूर्वक प्रयोग किया है 'मोटा मुस्टंडा-सा उजड़ा चमन लगता था.४

पुरुष कथाकारों से भी बहुत पहले कृष्णा सोबती ने अपनी रचनाओं में गालियों और भद्दी अश्लील भाषा का पत्रों की मानसिकता के अनुरूप ही प्रयोग किया था. गीताश्री की कहानियों में भी गालियों का बेखटके प्रयोग हुआ है, 'और इसी नौकरी के लिए बॉस जबतब ताने मरता है 'स्साला हरामी!'५...'साली तेरी माँ .....'.६ 'सरे शहर के शराबी यहाँ इकट्ठा हों, और लकड़ियाँ रोज़ आयें तो उनसे बड़ी 'छिनाल' कोई नहीं' ७ कुछ स्थानों पर स्थिति कि मांग के अनुसार यह शब्दावली प्रयुक्त हुई है किन्तु कई बार केवल अपने को साहसी या बोल्ड साबित करने के लिए ही इन अश्लील गालियों का गीताश्री ने इस्तेमाल किया है.

3. भाषा का सरलीकरण: समकालीन हिंदी कहानी ने अत्यंत सहज एवं सरल भाषा को अपनाकर किस्सागोई की प्राचीन प्रथा को दोबारा जीवंत बना दिया है. कमलेश्वर और अमरकांत जैसे लेखकों ने भरी भरकम शब्दावली को त्याग कर सीधी-सादी हिंदी को अपनी कहानियों के लिया चुना है. बाद के कहानीकारों ने भी इसी परम्परा को अपनाया और सरलता को ही अपनी शक्ति बनाने पर जोर दिया है. गीताश्री ने भ्रष्टाचार जैसे गंभीर विषय के लिए लिखा है 'जंगली नाले में पानी भरा रहे नदी छलकती रहे, इनका 'महुआ' पकता रहा.'८ कोलकत्ता के एक छोटे से गाँव का चित्र सरल शब्दों के माध्यम से ही सजीव हो उठा है 'धुलियान की दुपहरी कैसे गंधाती थी.'९

रिश्तों के बीच बढ़ते तनाव को गीताश्री ने बड़ी कारीगरी के साथ एक छोटे से बिम्ब में बांध लिया है 'वातावरण के नमी बूँद-बूँद कर एयर-कंडीशनर से टपक रही थी'१० हिंदी गद्य भाषा के विकास की यह एक शरुआत कही जा सकती जहाँ कम से कम शब्दों द्वारा बड़ी सरलता से कथाकार अपनी बात दर्ज कर रहा है.

४.कोरी भावुकता और रूमानियत से मुक्ति: छायावादी युगीन भावुकता और रूमानियत कविता के साथ-साथ कहानी को भी जकड़े रही. किन्तु ७० के दशक तक आते-आते हालात की चुनौतियों और ठोस हकीकतों ने नए कहानीकार को यथार्थ के धरातल पर ला पटका और अब प्रेम-प्रसाद युगीन भावुकता लुप्त होती चली गयी. उपमा,उत्प्रेक्षा के स्थान पर सीधी सपाट अभिव्यक्ति गद्य का अभिन्न अंग बन गयी. कोमल और रंगीन शब्दावली के प्रयोग का जुनून जाता रहा तथा कल्पना के सुंदर पंख काट दिए गए.

प्रेम पात्र का चित्रण गीताश्री ने इतनी सादगी से किया है मानो किसी पडोसी का वर्णन किया जा रहा हो 'ही जेनुइंली लव मी, सपोर्ट मी. हाँ, मुझे वक्त कम देता है.... बट ही इस वैरी केयरिंग'११ भावुकता के स्थान पर पैर जमाती हुई कोरी दैहिक और मांसल भावना को लेखिका ने कुछ इस प्रकार चित्रित किया है ' लिपटालिपटी चुम्माचाटी सब अंदर ही चलती कार में कर लेंगे.'१२ वर्तमान जगत के प्रेम संबंधों के बीच बढती सुरक्षित दूरियों को गीताश्री ने कुछ इस तरह उकेरा है 'हर बार हम प्रेमी और प्रेमिका कि मानिंद मिलेंगे . हम जीवन एक संग जियेगें, लेकिन विवाह नहीं....नो फेरे ...नो बंधन...और तो और लिव इन भी नहीं.'१३ इस प्रकार समकालीन कहानी की भाषा भावनात्मक संसार से दूर ठोस धरती पर कदम जमा चुकी है.

५.अभिव्यक्ति की नवीनता: समकालीन कहानीकारों ने जहाँ अपनी जीवन शैली ही पूर्ण रूप से बदल ली है, फिर भला उनकी अभिव्यक्ति कि भाषा कैसे पारंपरिक हो सकती है. काव्यात्मक उपमानों और प्रतीकों की बजाये आज कथाकार दैनिक जीवन प्रसंगों से ही अपने बिम्ब, उपमान और प्रतीक ढूँढ लेते हैं. पुरानी भाषा के प्रति बढती अवज्ञा ने भले ही इनकी भाषा में ताजगी और जिंदादिली भर दी है मगर नवीनता के प्रति इनका बढ़ता आग्रह कई बार अटपटा और बेजान हो जाता है. गीताश्री ने एक स्थान पर प्रेमी की बेरुखी को प्रकट करने के लिए एक बिल्कुल नयी अभिव्यक्ति ढूंढ निकली है 'इन्द्रजीत का साथ जिस रात को सुरमई बना जाता था, वही उसके इस व्यवहार से यकबयक चारकोल सी कलि लगने लगी है.'१४ जीवन के संतोष को नापने के लिए नवीन कथाकारों के नाप भी बदलते जा रहे हैं 'चेहरे पर आश्वस्ति का भाव जैसे भटके हुए नाविक को सामने टापू दिख गया हो.'१५ दो लोगों का सामना या मुलाक़ात अब केवल एक टकराहट बन गया है 'दोनों के चेहरे दिन भर कई बार टकराते.'१६ संप्रेषण के बढ़ते माध्यमों के बीच अकेले पड़ते जा रहे मनुष्य की व्यथा को गीताश्री ने वर्त्तमान पीढ़ी कि भाषा में ही ज़ाहिर किया है 'कभी-कभी हमारी आँखें, ज़िन्दगी का इनबॉक्स बन जाति हैं, जिसमे से कई ई-मेल झांकते रहते हैं जो अनरीड, अनपढ़े रहते हैं. जिन्हें पढने का कई बार टाइम नहीं मिलता हमें.'१७ इस प्रकार समकालीन कहानीकारों के नूतन प्रयोगों से भाषा काफी समृद्ध होती जा रही है.

६.व्यंग्य का तीखापन और गहराई: आधुनिक कहानीकारों ने भाषा तो बड़ी सरल अपनाई है मगर उसका पैनापन और कसाव स्थिति पर अपनी पकड़ बनाये रखता है. सडी-गली मान्यताओं, व्यवस्था के खोखलेपन और भ्रष्टाचार के घिनौने चेहरे को बेनकाब करने की क्षमता इस भाषा में कूट-कूट कर भरी हुई है. लेखिका गीताश्री ने भी इसी धारदार भाषा का अपने व्यंग्य प्रहारों में प्रयोग किया है. घरेलू हिंसा का घिनौना चेहरा सामने लेट हुए वह लिखती 'दादाजी ने अपना रुतबा बनाया.गाँव में सब से आलिशान घर बनाया. गाँव के सभी बच्चों को ताली बजाने के लिए एक पगली दादी बनाई.'१८ एक आधुनिका के बेबाक सच को जब पुरुष

मित्र मज़ाक में उड़ने का प्रयास करते हैं तब वही साहसी और बोल्ड लड़की उनसे प्रश्न करती है 'क्यों ....व्हाई...बिकाउज़ आय एम ए गर्ल इसलिए आपको जोके लग रहा है.'१९ राजनीतिक आंदोलनों को भी इन लेखकों ने अनदेखा नहीं किया है. गीताश्री ने एक कहानी कि शरुआत ही इस चुटीले व्यंग्य से की है 'सुबह से अन्ना की आंधी आयी हुई है.'१९

७. नयी भाषाभिव्यक्ति की तलाश: आज कहानीकार नए प्रयोगों और प्रवृत्तियों को अपनाकर पारंपरिक रुढियों को तोड़ते हुए सर्वथा नयी अभिव्यक्ति की तलाश में जुटे हुए हैं. समय के साथ भाषा ने भी अपने तेवर बदले हैं और उसी बदलाव की झलक हम नयी कहानियों में देख रहे हैं. राजी सेठ, सुधा अरोरा,उषा प्रियंवदा जैसी लेखिकाओं ने भाषा कि इस नयी तराश-ख़राश पर विशेष जोर दिया है. गीताश्री भी उभरती हुई लेखिकाओं में अपना एक स्थान दर्ज करवा चुकी हैं. उन्होंने भी अपनी कहानियों में बिलकुल नयी अभिव्यक्ति शैली अपनाई है. रोती हुई आँखों के लिए एक नयी उपमा एक कहानी में नज़र आई है 'पहली बार स्त्री का दुःख छलक आया वक्त के कटोरे से..'२० माँ और बेटी के बीच एक अनोखे रिश्ते को गीताश्री ने नवीन अभिव्यक्ति का सहारा लेकर उजागर करते हुए लिखा है 'माँ कि आँखें फैली सिकुड़ी. चेहरे की रेखाएं वक्त की तरह गहरी दिखने लगीं. वह किसी चालक परीक्षक कि तरह जवाब लेने पर आमादा थीं और शालू किसी भोथ विद्यार्थी कि तरह फ़ैल होने के लिए.'२१

शहर की आवास व्यवस्था पर तकरीबन सभी रचनाकारों ने अपनी राय विभिन्न प्रतीकों द्वारा प्रकट कि है. गीताश्री ने भी इन शहराती घरों का हाल कुछ इस तरह बयान किया है 'इन बंद टिफिन जैसे मकानों कि यही खूबीयां तो बहुत से राज़ दफ़न किये रहती हैं.'२२ ज़िन्दगी की नवीन पद्धति ने देखिये भाषा को कितना तोड़-मरोड़ कर नया रूप देने की ठान ली है 'कार-ओ-बार' (शराब पीनेवालों के बीच प्रचलित)२३ नयी क्लब संस्कृति ने कई शब्दों और मुहावरों को गढ़ा है.उदा. 'दो पैग भीतर फिर देवता पित्तर' २४ एस.एम.एस कि भाषा ने हमारे साहित्य की भाषा को भी कई सरल मार्ग या शोर्ट-कट्स सिखला दिए हैं जैसे लड्केबाज़ी और

राजुलविहीन(किसी पात्र का अभाव दर्शाने हेतु)२५ क्लबबाज़ी, बियर-प्रेम क्लब का चस्का इत्यादि कुछ ऐसे ही शब्द हैं जिन्हें नयी पीढ़ी के इन रचनाकारों ने तराशा है ताकि नए समय की मांग पूरी हो सके. भाषा इन सारी नयी और आकर्षक उप लब्धियों के कारण समृद्ध तो ज़रूर हो रही है मगर एक भाषा परम्परा दम तोड़ रही है.

८.अंग्रेजी भाषा का सहज प्रभाव और अंगीकार: कहानी जहाँ जीवन से निकट आयी है, उसने हमारी बोलचाल की सभी प्रवृत्तियोंको आत्मसात कर लिया है.आज तकरीबन हर वर्ग, हर जाति और धर्म के लोग, पढेलिखे हो या अनपढ़ हर कोई निस्संकोच प्रयोग कर रहा है. यह काफी स्वाभाविक है कि हमारे समाज को प्रतिबिम्बित करनेवाली कहानियों के जीते-जागते पात्र वही भाषा बोलेंगे जो हम बोलते हैं. अंग्रेजी के शब्द, वाक्य या वाक्यांश का प्रयोग उषा प्रियंवदा और राजी सेठ जैसी कई लेखिकाओं ने दशकों पहले ही आरम्भ कर दिया था क्योंकि उनकी रचनाओं के पात्र विदेशी सभ्यता के रंग में रंगे हुआ करते थे. अंग्रेजी भाषा ने शिक्षित वर्ग की मानसिकता, चिंतन और अभिव्यक्ति को भरपूर सहारा दिया है. आज की कहानी में हमें पुरे के पुरे संवाद ही अंग्रेजी में पढने को मिलते हैं. गीताश्री की कुल १४ कहानियों के अध्ययन से यह बात खुलकर सामने आती है कि उनका शायद ही कोई ऐसा संवाद हो जो बिना अंग्रेजी शब्दों के पूर्ण हो पाया है. शब्दों की लम्बी

सूची तैयार करने के बजाए हम कुछ शब्द उदहारण स्वरुप अवश्य ही लेंगे बॉस,ईमेज,ट्राई,बॉय-फ्रेंड, ओके, फाइन, केरीऑन, गॉसिप, ब्रेकअप, फॉलोअप, इत्यादि जैसे सैंकड़ों शब्द हैं जिनके बिना कोई वाक्य पूरा नहीं हो पाता है. इसके अतिरिक्त कई जगहों पर उन्होंने वाक्यांशों का सहारा लेकर हिंगलिश भाषा की खिचड़ी तैयार की है. उदाहरण स्वरूप 'आई नो योर फीलिंग यार'२६ 'यु डोंट नो पॉवर ऑफ द....'२७ इट्स नॉट फेयर आरपी'२८ कहीं पर केवल एकाध शब्द ही हिंदी का नज़र आता है जैसे 'यु नो दिस इज क्रेज़ी बिहेवियर ....बताओ मुझे क्या परेशानी है?'२९

अंग्रेजी भाषा का यह सहज प्रयोग आधुनिक युगबोध की ओर इशारा कर रहा है.

९.उर्दू भाषा के शब्दों का सुंदर प्रयोग: हिंदी कथा साहित्य में उर्दू के शब्दों का प्रयोग कोई नयी बात नहीं है. प्रेमचंद ने उर्दू मिश्रित हिंदी का जो खुबसूरत प्रयोग किया है उसकी आज भी मिसाल दी जा सकती है. आधुनिक युग में कृष्णा सोबती ने उर्दू भाषा की रवानगी का बड़ा ही मनोहर इस्तेमाल किया है. उर्दू भाषा पर उनकी पकड़ और प्रभुत्व ने उनकी कहानियों में चार चाँद लगा दिए हैं. भाषा के मिजाज़ को समझते हुए उसका प्रयोग वाकई सोने पर सुहागे का कम करता है और यदि उर्दू का रंग हिंदी पर चढ़ जाये तो मज़ा दुगना हो उठता है. किसी ने क्या खूब कहा है.....वह करे बात तो हर लफ्ज़ से खुशबु आये.

ऐसी बोली वही बोले जिसे उर्दू आये

मगर नए कहानीकारों में एक होड़ सी लगी हुई है अधिक से अधिक उर्दू भाषा के शब्द-प्रयोग द्वारा अपनी एक अलग पहचान बनाने की जिस के चलते अनावश्यक रूप से भी उर्दू शब्दों की भरमार कर दी जाती है. गीताश्री की रचनाओं में भी अंग्रेजी के अलावा उर्दू के शब्दों का भी अच्छा-खासा मिश्रण देखने को मिलता है.

उदा: नज़र अंदाज़, यकबयक, खामख़याली, आदमकद, निसार, सरगोशियाँ, कायनात, वाक्या,

महफूज़, तब्दील, दावत, हुजूम, अव्वल, तैनात इत्यादि. कहीं पर लेखिका ने एक वाक्य में एक से अदिक शब्द भी उर्दू के प्रयुक्त किये हैं जैसे 'अपने लहजे में मासूमियत और इसरार का गाढ़ा रंग घोल दिया.'३० या फिर 'उनके हुक्म की उदूली की ताब किसी में नहीं थी.'३१ कही पर उन्होंने मुस्लिम समाज में इस्तेमाल होने वाले मुहावरों का भी अच्छा प्रयोग किया है जैसे 'फी अमानाल्लाह'३२ या 'कसीदे पढ़ना'३३ उर्दू के इस नए बढ़ते हुए भाषिक प्रयोग ने अवश्य ही हिंदी की शब्दावली को समृद्ध किया है.

१०. लोक भाषा या आंचलिक भाषा का प्रयोग: समकालीन कथाकारों ने हिंदी भाषा में रचना करते हुए प्रायः अपनी क्षेत्रीय बोलियों के शब्दों का भी सुंदर प्रयोग करते हुए पात्रों के संवादों को अधिक जानदार बनाने के प्रयास किया है. फनीश्वरनाथ की परम्परा को निभाते हुए कई रचनाकारों ने अंचल विशेष की बोलियों के शब्दों से अपनी कहानी का श्रृंगार किया है. शिव प्रसाद सिंह, भैरव प्रसा गुप्ता,भीमसेन त्यागी जैसे रचनाकारों ने अपनी बोलियों का तड़का हिंदी भाषा में लगाया है. कहानी को जीवन यथार्थ से करीब लाने के लिए बंगाली भाषी गीताश्री ने भी अपनी एक कहानी 'सोनमछरी' में बंगाली के शब्दों कि मिठास घोल दी है. 'देवो जानम' ३४

'आमी जाबो न' ३५ 'एई दिवो आमार संसार चोलबे न'३६ इसके अतिरिक्त उन्होंने बंगाली लोक कथा का भी सन्दर्भ दिया है जहाँ नायिका सोचती है कि उसका शंकर (पति) भी सोन फूल लेन गया है उसी कथा के राजा की भांति. 'सूजोन मांझी रे'३६ जैसे मधुर लोक गीत का भी लेखिका ने प्रसंगवश बढ़िया प्रयोग किया

है. बंगाली के अतिरिक्त कई कहानियों में पात्रों की स्थिती के अनुसार कुछ स्थानों पर उन्होंने बिहारी भाषा के भी सुंदर नमूने जुटाए हैं. लोक भाषा का हिंदी के साथ यह संगम काफी सटीक एवं यथार्थ के निकट जन पडता है. उदा.'ललिया मति हाथ में लेके सर्-सोलकन के बच्चा के साथै खेल रही है.टंका देखिये इ अब बड़ी हो गयी.तनको ज्ञान नहीं है इसको.' 'भाग जो दादा एईथुन'३८ इसके अलावा चाय सेरा गयी, जिन्नगी,ठुकाई,अगोर, छिछियाती, बात न बुझतो' जैसे अनेकों शब्द गीताश्री की कहानियों में एक विशेष लोक गंध उत्पन्न कर रहे हैं.

समकालीन कहानी ने अपने कथ्य के अनुरूप ही सटीक, पारदर्शी और संवेदनशील भाषा को जन्म दिया है जिसने बड़ी सशक्तता से सूक्ष्म से सूक्ष्म मनोभावो को चित्रित करने का बीड़ा उठाया है.

सन्दर्भ:

प्रार्थना के बाहर और अन्य कहानियां गीताश्री वाणी प्रकाशन २०१३

1. वही पृ. ३५
2. वही पृ. २५
3. वही पृ. १९
4. वही. पृ. २१
5. वही. पृ. १९
6. वही. पृ. २२
7. वही. पृ. १०२
8. वही. पृ. १०७
9. वही. पृ. ३४
१०. वही. पृ. ५३
११. वही. पृ.६८
१२. वही. पृ. ११५
१३. वही. पृ. ५५
१४. वही. पृ. ५२
१५. वही. पृ. ७२
१६. वही. पृ. ७६
१७. वही. पृ. ६५
१८. वही. पृ. ४८
१९. वही. पृ. ५७
२०. वही. पृ. ८९
२१. वही. पृ. ९३
२२. वही. पृ. ९४
२३. वही. पृ. ९८
२४. वही. पृ. ९७

२५. वही. पृ. २५/२७
२६. वही. पृ. १००
२७. वही. पृ. २४
२८. वही. पृ.५१
२९. वही. पृ. ४३
३०. वही. पृ. ७७
३१. वही. पृ. ४५
३२. वही. पृ. ४२
३३. वही. पृ. १९
३४. वही. पृ. ३१
३५. वही. पृ. ३५
३६. वही. पृ. ३२
३७. वही. पृ. ४६
३८. वही. पृ. ४३
३९. वही. पृ. ३९